वहाबी मत का सत्य

लेखक : आयतुल्लाहिल उज़्मा सय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी
सम्पादन : नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

क़िस्त : (7)

हाफ़िज़ इब्ने हजर की इसाबा में है कि हज़रत[स] ने उस्मान बिन मज़ऊन की लाष को चूमा उस समय आप[स] रो रहे थे।

रसूल[स] की मृत्यु के बाद भी आपके कक्ष और पवित्र रौज़ा (कब्र का भवन) और दूसरी वह चीज़ें जो आपसे जुड़ी हुई थीं उनको मुसलमान चूमते आए हैं और उलमा सहमत रहे इमाम अहमद बिन हम्बल के एक मित्र इब्राहीम हरबी के लिए शैख मनसूर हम्बली ने हाषियाए इकनआ में लिखा है कि उन्होंने कहा "नबी के कक्ष को चूमना सुन्नत है (अच्छा है)।"

महदी अब्बासी के पास एक व्यक्ति जूते लाया, इस दावे के साथ कि यह रसूलल्लाह[स0] ने पहने हैं। इसके बाद कहा कि मुझे मालूम है कि यह व्यक्ति झूठ कहता है रसूल[स] के पवित्र पांव से यह जूते छुए तक नहीं फिर भी इसलिए खड़ा होकर चूमा आँखों से लगाया कि आम मुसलमान मुझ पर निरादर करने का आरोप लगाऐंगे कि मेरे पास रसूलल्लाह[स0] को जूते लाये गये और मैंने उनका आदर नहीं किया। इसको शैख इब्ने अरबी ने "महाज़रातुल अबरार" में लिखा है। इससे पता चलता है कि पैग़म्बर से जुड़ी वस्तुओं का आदर सारे मुसलमानों में होता था। आदर व बरकत लेने का एक तरीक़ा छूना भी है चाहे अपने हाथ को हज़रत के शरीर तक पहुँचाकर या आपसे ख्वाहिष करना कि आप उस पर हाथ फेर दें। इन दोनों बातों के सही होने का सबूत स्वंय आपके कार्य व आज्ञा से मिलता है। हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी ने इसाबा में लिखा है कि बनी बक्कार का एक प्रतिनिधि मण्डल (Defgation) पैग़म्बर[स0] के पास आया उनमें मअ़विया बिन सूर बिन उबादा उनके सरदार थे जिनकी आयु सौ वर्ष की थी। यह सब मुसलमान हुए और जाते समय मुआविया ने यह चाहत की कि मैं आपके शरीर को स्पर्ष करके बरकत पाना चाहता हूँ। हज़रत ने उसे आज्ञा दे दी। फिर उन्होंने कहा कि मेरा बेटा बुष्र बड़ा शिष्ट है आप[स] उसके चेहरे पर अपना हाथ फेर दीजिए। हज़रत ने उसके चेहरे पर हाथ फेर दिया।

हज़रत के पवित्र बालों के बटवारे के बारे में अहले सुन्नत की सिहाए सित्ता (हदीसों के छः बड़े संकलन जिन्हें अहले सुन्नत किताब कुरआने मजीद के बाद हर किताब से सर्वोपरि मानते हैं) से पता चलता है कि वह स्वंय हज़रत[स] की आदेश से बटते थे। जैसा कि सहीहे मुस्लिम में है कि हज़रत[स] ने अबू तलहा अन्सारी से जिन्होंने आपके[स] सिर से पवित्र केषों को साफ़ किया था, से कहा कि इन्हें लोगों में बाँट दो।

"महाज़रातुल अवाइल" में है कि उन बालों को अबू तलहा ने हज़रत[स] की आज्ञा से इसलिए बाँटे कि वह सहाबा के पास बरकत के लिए रहें। "जामए बैनुस्सहीहैन" में अब्दुल्लाह बिन मुवहब की रिवायत है कि मेरे घर वालों ने मुझे रसूलल्लाह[स] की बीवी जनाबे उम्मे सलमा के पास पानी के एक प्याले के साथ भेजा। वह चाँदी का एक बर्तन लाई जिसमें हज़रत[स] के पवित्र केष थे। उनमें से कुछ केष उन्होंने उस प्याले में डाल दिए। और जब कोई बीमार होता था तो वह उसी बर्तन से निकाल कर केष डाल देती थीं। और वह बीमार उस पानी को पीता था। रावी का बयान है कि मैंने झुक कर देखा उस बर्तन में तो कुछ लाल रंग के केष थे।

क़ाज़ी अय्याज़ ने शफ़ा में हज़रत के चमत्कार और बरकत में लिखा है कि हज़रत[स] के कुछ केष

ख़ालिद बिन वलीद की टोपी में थे जिसकी वजह से वह हर लड़ाई में विजयी होते थे।

बुख़ारी की रिवायत इब्ने सीरीन से है कि उन्होंने उबैदा से कहा कि हमारे पास कुछ पवित्र केष (हज़रत के) हैं जो हमें अनस या उनके घर वालों से मिले हैं। उन्होंने कहा अगर उनमें से एक केष मेरे पास होता तो वह मेरे लिए दुनिया और जो कुछ इसमें है से भी अच्छा होता।

इसी तरह जो वस्तु भी कुछ भी हज़रत[स] से जुड़ी हुई हो उसे सदैव बरकत वाली और पवित्र समझा गया अतः क़ाज़ी अय्याज़ षफ़ा में लिखते हैं कि अब्दुल्लाह बिन उमर रसूल[स] के मिम्बर के उस स्थान पर जहाँ हज़रत[स] बैठते थे हाथ रखते थे और उसे बरकत के लिए अपने मुख पर मलते थे।

हाफ़िज ईब्ने हजर की 'इसाबा' में है कि जब यज़ीद बिन असवद की मृत्यु का समय निकट आया तो हज़रत[स] के सहाबी वासला बिन असक़अ उनके निकट आए और उनका हाथ अपने मुँह पर मला और सीने पर रखा और कहा कि यह वो हाथ है जो हज़रत के पाक हाथों से छुआ हुआ है।

मुसनदे अहमद में उम्मे सुलैम से रिवायत है कि हज़रत[स] ने एक मष्क (पानी भरने की थैली) से जो उनके यहाँ थी पानी पिया तो उस मष्क का मुहँ जो हज़रत के पवित्र दामन से छू गया था अलग कर के शुभ लाभ (बरकत) के लिए रख लिया गया और ऐसा ही वाक़ेआ इब्ने माजाह और तिर्मिज़ी ने कबषाह अनसारिया के बारे में लिखा है और तिरीमज़ी ने 'हसन सही' लिखा है।

"जमऐबैनुस्सहीहैन" में सहल बिन सअ़द सहाबी के बारे में लिखा है कि उन्होंने एक चादर हज़रत[स] से माँगी जब लोगों ने उस चादर के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि मैंने इसे इसलिए लिया है कि यह मेरा कफ़न हो और इस प्रकार में क़ब्र की यातना से बच जाऊँ।

क़ाज़ी अय्याज़ की षिफ़ा में है कि सहाबी लोग आपके[स] चिन्हों को बड़ी–बड़ी क़ीमतों पर पाते थे।

यह सब साक्ष्य इस मतलब के साबित करने के लिए पर्याप्त हैं। वहाबी लोग जो अपने आपको अहले सुन्नत में गिनते हैं और उन्हीं के सहमत लोग जो भारत में अपने आपको अहले हदीस कहते हैं। मगर उनका धर्म जो हज़रत से तवस्सुल का विरोध है और आपसे जुड़ी चीज़ों के आदर के ख़िलाफ़ है सुन्नत (रसूल[स0] का चलन/पाक प्रवृत्ति) के भी ख़िलाफ़ और हदीस के अनुसार से भी ग़लत है।

तीसरा अध्याय
वहाबी विचार औलिया व सालेहीन (सदाचारीगण) के बारे में

इब्ने अब्दुलवहाब को इन लोगों की बड़ाई व बुजुर्गी महिमा से कड़ा इन्कार है। उनका विश्वास यह था कि उनमें से किसी से भी तवस्सुल और अल्लाह के यहाँ षिफ़ाअत की चाहत रखना उन्हें खुदा समझ लेना है और इबादत में उसके साथ दूसरों को मिला लेना है।

इसे उन्होंने और उनके मानने वालों ने बड़ी–लम्बी बातों के साथ लिखा है जिनमें से कुछ के विषय को हम उनके विचारों को प्रकट करने के लिए लिखते हैं। फिर उनके विचारों की एक–एक करके काट की जाऐगी।

स्वंय इब्ने अब्दुल वहाब ने अपनी किताब "अत्तौहीद" में उन कुरआन की आयतों को लिखने के बाद जो तौहीद (अल्लाह को एक मानना) के बारे में है और दूसरे खुदाओं की इबादत (भक्ति) करने वालों की काट में लिखा है किः

"यह षिर्क जो इन आयतों और ऐसी ही दूसरी आयतों का अभिप्राय है इसमें सम्मिलित हैं क़ब्रों के पूजने वालों, नबियों और फरिष्तों और बड़े धार्मिक पुरूषों की उपासना करने वालों का षिर्क। यही अरब में जाहिलियत के समय का षिर्क था जिसके समाप्त करने के लिए हज़रत मुहम्मद मुस्तफा[स] आए थे कि वह उनसे दुआ मांगते थे और उनकी ओर आश्रय लेते थे और उनसे मांग करते थे खुदा के यहाँ उनको अपना माध्यम मानते थे जैसा कि कुरान मजीद की बहुत सी आयतों में आया है। यद्यपि वह उन्हें आसमान,

धरती या किसी एक कण का भी ख़ालिक़ (सृजन हार) नहीं समझते थे, मगर क्योंकि उनकी उपासना करते थे अतः वह मुशरिक कहलाए तो इसी प्रकार यह लोग जो औलिया (ख़ुदा के 'दोस्त')व सालेहीन (सदाचारी/नेक लोग) का वास्ता देते हैं उनसे दुआ मांगते हैं।"

इसमें सबसे मूलभूत ग़लती यह है कि क़ब्रों की ज़ियारत करने वालों औलिया व मुक़र्रेबीन (खुदा के पास किये हुओं) का आदर करने वालों को उनकी उपासना करने वाला कहा गया है। इसलिए उपासना के अर्थ को समझना होगा कि उपासना का अर्थ क्या है?

"इबादत् (उपासना) वास्तव में किसी ख़ास काम का नाम नहीं है बल्कि ये वह काम है जो किसी को खुदा समझने की नियत/मन से किया जाए। इसी लिए बच्चों का अपने माँ बाप के सामने झुकना और अनपढ़ का एक ज्ञानी के सामने झुकना। एक उम्मती का सादात के सामने झुकना, किसी भी छोटे का अपने बड़े के सामने झुकना उपासना नहीं है। मगर पारसियों का आग के सम्मुख झुकना और मूर्तियों की पूजा करने वालों का मूर्ती के सम्मुख झुकना उपासना है। इससे पता चला की षिर्क का रिष्ता किसी कार्य से नहीं बल्कि विचार और आस्था से है। हो सकता है किसी को सजदा किया जाए मगर वह उपासना उसकी न हो और हो सकता है कि केवल आँख का इषारा हो और वह उपासना हो।

मुशरिक अपनी मूर्तियों को खुदा समझते थे। अतः कहते थे कि हम उनकी उपासना करते हैं। मगर मुसलमान जो रसूलल्लाह[स] या किसी और अल्लाह के यहाँ पहुँच रखने वाले का आदर करते हैं उनसे पूछा जाए तो वह कहेंगे कि हम उनकी उपासना नहीं करते उपासना अल्लाह की करते हैं। हाँ हम उनका आदर सत्कार करते हैं। यहीं से मुसलमानों में और मुशरिकों में अन्तर स्पष्ट है।

इस प्रकार का आदर सत्कार षिर्क नहीं हो सकता जबकि माता पिता के लिए स्वंय अल्लाह ने आदेश दिया है कि उनके सामने अपने को गिरा के बेबसी के साथ झुकाए रहा करो। यह आदर का आदेश नहीं तो और क्या है?

और अल्लाह कहता है :

"जो अल्लाह की निषानियों का आदर करे तो यह दिलों की परहेज़गारी (सयंम) का एक हिस्सा है।" और इसी प्रकार अल्लाह आदरणीय के आदर करने के बारे में हज़रत को आदेश दिया कि अपने कंधों को झुकाइए उसके लिए कि जो मोमेनों में से आपकी पूरी इताअत (अनुसरण) करने वाला है।"

सबसे बड़ी बात यह कि स्वंय अल्लाह ने फरिष्तों को आदेश दिया कि वह जनाबे आदम[स] को सजदा करें और इब्लीस को सजदा न करने पर अपने यहाँ से निकाल दिया और उसे धिक्कारा बना दिया और सुरए 'युसुफ़' में है कि हज़रत युसुफ़[अ] ने सपने में देखा कि ग्यारह सितारे और चाँद सूरज उन्हें सजदा कर रहे हैं फिर इसका अर्थ इस प्रकार मिला कि उन्होंने अपने पिता को जो अल्लाह के नबी हज़रत याकूब[अ] थे और अपनी माता को ऊँचे आसन पर बिठाया तो उन दोनों ने और सब भाईयों ने जो ग्यारह थे उन्हें सजदा किया।

इस्लामी शरीअत (धर्म विधि) में अल्लाह के अनिरिक्त किसी के लिए भी सजदा ठीक (मान्य) ना होना एक शरियत का हुक्म है। मगर पुरानी शरीयतों में ऐसा नहीं था यह इस बात का अचूक और सटीक सबूत है कि वो षिर्क नहीं है क्योंकि उसूलेदीन में सब नबी एक हैं। जो चीज़ षिर्क में हो वह कभी भी किसी भी शरियत में मान्य नहीं हो सकती।

इससे यह बात तो अटूट प्रमाण को पहुँच गई कि हर आदर सत्कार षिर्क नहीं है। उपासना की बुनियाद खुदा समझने पर है। जो मुसलमान नबियों, औलिया व मुक़र्रेबीन (पहुँचे हुए बन्दों) का आदर सत्कार करके उनके दिमाग़ में उनके ख़ुदा होने का विचार बिल्कुल नहीं होता बल्कि यक़ीन के साथ सच्चे मन से जानते हैं कि यह अल्लाह के बन्दे (दास) हैं जिन्होंने अपना पूरा जीवन उसकी उपासना/भक्ति में लगा दिया और उसके

मार्ग में उन लोगों ने बलिदान किये। इस कारण वह हमारे आदर सत्कार के लायक (पात्र) हुए तो यह आदर वास्तव में अल्लाह का आदर है जो असल तौहीद है और यह आदर अल्लाह के अन्य का जो अल्लाह से खास लगाव के कारण है आदर उन लोगों का है मगर वह उपासना उनकी नहीं है बल्कि उसकी उपासना है जिस की ओर उन के लगाव से उनका आदर सत्कार हो रहा है।

और दुआ सीधे उनसे नहीं होती कि हम अपनी इच्छा पूर्ति के लिए अल्लाह से बेपरवाह होकर इन्हें काफ़ी समझते हैं, अर्थ यह होता है कि यह जो अल्लाह के यहाँ उसकी उपासना और भक्ति के कारण वे पहुँचे हुए है, हमारे लिए वह अल्लाह के यहाँ दुआ करें और यह सब मोमेनों के लिए आपस में आया है कि एक की दुआ दूसरे के बारे में ज़्यादा कुबूल होती है और चूँकि हम उन्हें जीवित समझते हैं जिस प्रकार कुरान में शहीदों के बारे में आया है, तो हम मदद के लिए जो उन्हें सम्बोधित करते हुए कहते हैं उसका भी अर्थ यह होता है कि वह हमारे लिए अल्लाह से दुआ करेंगे या उसकी आज्ञा से स्वंय हमारी मदद करेंगे और इसी प्रकार अल्लाह के काम को करने की अपेक्षा दूसरे के लिए भी साबित है जैसे मृत्यु का देना अल्लाह का काम है। अल्लाह कहता है कि अल्लाह मौत देता है उनकी मृत्यु के समय और दूसरे स्थान पर कहता है कि तुम्हें मृत्यु देता है मृत्यु का फ़रिष्ता (यमराज) और तीसरे स्थान पर इस कार्य का करना उन फ़रिष्तों की ओर किया गया है जो यमराज के अधीन है और कहता गया कि वह जिन्हें फ़रिष्ते मृत्यु देते हैं मगर यह कि वह अपनी जानों पर अत्याचार करते हैं इस प्रकार रोज़ी रोटी/आजीविका देना या संतान देना किसी दूसरे की ओर तत्सम्बन्धित हो तो इसमें कोई बुराई नहीं है। जबकि कहने वाला यही विचार रखता हो कि वास्तव में देने वाला अल्लाह ही है और यह अगर देंगे तो उसके आदेश ही से या स्वयं उसके यहाँ सिफारिष के द्वारा।

सुनने अबूदाऊद में खुबैर बिन मुतइम की रिवायत है कि एक आराबी (बद्दु/असभ्य अरब) ने हज़रत[स] के पास आकर सूखे का हाल सुनाया और उसका मतलब ये था कि हज़रत वर्षा के लिए दुआ करें मगर उसने ये कहा कि हम अल्लाह से सिफ़ारिष कराते हैं आप[स] के यहाँ और आप[स] की शफ़ाअत चाहते हैं अल्लाह के यहाँ। पहले वाक्य पर आप[स] ने कई बार अल्लाह की सराहना की और कहा वह बहुत बड़ा है इससे कि उसको किसी के पास सिफ़ारिष के लिए लाया जाए। इससे पता चलता है कि अपने इस वाक्य पर कि आप अल्लाह के यहाँ सिफ़ारिष कीजिए कोई आपत्ति नहीं की।

हाँ जो व्यक्ति उन महापुरूषों को अल्लाह के बराबर समझे और अल्लाह के मुक़ाबले में उन्हें दुआओं का कबूल करने वाला समझे उसे हम भी मुशरिक समझते हैं। इब्ने अब्दुल वहाब का कहना है कि: "जो कुछ मुसलमानों को औलिया व सालेहीन के साथ आस्था है यही बस अरब के मुशरिक करते थे।'' यह कुरान की नज़र में ठीक नहीं है। कुराने मजीद से साबित है कि वह अपनी मूर्तियों को 'अल्लाह' कहते थे अर्थात् ख़ुदा समझते थे वह खुदा की उपासना (भक्ति) से अपने को बेपरवाह समझते थे। अतः कुरान में है कि "उन्होंने पैग़म्बर के लिए कहा कि यह हमें हमारे खुदाओं से भटकाए देता है।"

सुरए साफ़्फ़ात में है कि वह कहते थे कि "क्या हम एक दीवाने कवि की वजह से अपने ख़ुदाओं को छोड़ दें?"

सुरा सॉद में है उनकी ज़बानी रसूल[स] के लिए कि इसने बहुत से खुदाओं को एक खुदा बना दिया। यह अजीब बात है।

सुरा शुअ़रा में है जहन्नम वासियों की ज़बानी कि 'वह अपने खुदाओं से कहेंगे कि हम भटके हुए थे कि तुम्हें जगत के पालनहार के बराबर समझा। इससे पता चलता है कि वह अपने खुदाओं को अल्लाह के बराबर समझते थे। सुरा अहक़ाफ़ में है कि उन्होंने कहा "तुम आए हो कि हमें हमारे खुदाओं से हटाओं!"

✦✦✦